Page No.:
Date:

पाठ्यक्रम UNIT-3 (1)

Q4. पाठ्यक्रम का अर्थ, प्रकृति तथा इसका क्षेत्र एवं महत्व का सविस्तार से वर्णन करे ?

Ans पाठ्यक्रम - पाठ्यक्रम शिक्षा का एक अभिन्न अंग है जिसके द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति होती है जो उद्देश्यों एवं आदर्शों के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पाठ्यक्रम एक ऐसा साधन है जो छात्र व अध्यापक को जोड़ता है। अध्यापक पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्रों के मानसिक, शारीरिक, नैतिक, सांस्कृतिक, संवेगात्मक, आध्यात्मिक तथा सामाजिक विकास के लिए प्रयास करता है। पाठ्यक्रम एक प्रकार से छात्रों को प्रशिक्षण एवं अध्यापकों को दिशा-निर्देश अध्यापक के बाद छात्रों का दूसरा पथ प्रदर्शक है। शिक्षालय में होने वाले समस्त कार्यक्रम का आधार पाठ्यक्रम ही है।

पाठ्यक्रम का शाब्दिक अर्थ :→ अंग्रेजी में 'करी-कुलम' शब्द का प्रयोग किया 'करीकुलम' शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द 'क्यूरेरे' से हुई है। 'क्यूरेरे' का मतलब है 'दौड़ करना' या 'भाग' जैसे दौड़ के मैदान में कोई व्यक्ति दौड़कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है। वैसे ही पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थी निश्चित उद्देश्यों को प्राप्त कर सक

परिभाषाएं :→

* कनिंघम के अनुसार, " पाठ्यक्रम कलाकार (शिक्षक) के हाथ में एक साधन है जिससे वह अपनी सामग्री (शिक्षार्थी) को अपने आदर्श (उद्देश्य) के अनुसार अपनी प्रयोगशाला (विद्यालय) में ढाल सके "।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(2)

* जॉन डीवी के अनुसार "सीखने के विषय या पाठ्यक्रम पदार्थों, विचारों एवम सिद्धांतों का चित्रण है। जो निरन्तर उद्देश्यपूर्ण क्रियान्वेषण से साधन के रूप में आ जाते हैं।"

* डॉ. सफाया के अनुसार "पाठ्यक्रम स्कूलों में निर्देशन के कार्य के लिए एक निश्चित क्रम में व्यवस्थित किये गए विचारों के समूह अथवा अध्ययन की विषय-वस्तु के रूप में जाना गया है।"

पाठ्यक्रम के संकुचित अर्थ :→ पाठ्यक्रम केवल पाठ्यचर्या से अधिक कुछ नहीं। इस बात के अनुसार विभिन्न विषयों के अंतर्गत पढ़ाए जाने वाले विषयों के तथ्यों की सीमा या विस्तार कर दिया जाता है जिससे सैद्धांतिक ज्ञान होता है। ऐसा जिनका निर्माण शिक्षाविद करते हैं।

व्यापक अर्थ :– पाठ्यक्रम का तात्पर्य उन सभी अनुभवों से लिया जाता है। जिन्हें बालक अपनी रुचियों तथा आवश्यकताओं के अनुसार विभिन्न क्रियाओं द्वारा कक्षा के अंदर या बाहर हर समय प्राप्त करता रहता है।

* पाठ्यक्रम का महत्व :→ पाठ्यक्रम ही सम्पूर्ण शिक्षण क्रिया का आधार होता है। शैक्षिक प्रक्रिया में पाठ्यक्रम केन्द्र बिन्दु का कार्य करता है, जिसके चारों ओर शिक्षक एवम शिक्षार्थी अपने कर्तव्यों की पूर्ति व उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। पाठ्यक्रम के द्वारा ही विद्यालय का कार्य संगठित व संतुलित रूप से चल सकता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

1 शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक :- प्रत्येक अवधारणा को निर्माण कुछ निश्चित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए जाते हैं बिना उद्देश्यों के चलने वाली शिक्षण प्रक्रिया ठीक उसी प्रकार होती है जैसे- "पतवार के बिना नाव" इन उद्देश्यों को प्राप्त करने में पाठ्यक्रम ही एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा हम अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होते रहते हैं

2 शिक्षण सामग्री :→ प्रत्येक विद्यालय में शिक्षा व्यवस्था को सुचारु के लिए समय सामग्री का निर्माण किया जाता है इस प्रकार ही शिक्षण सामग्री का प्रयोग किया जाता है प्रत्येक विषय एवम् विषय-वस्तु का शिक्षा प्रक्रिया में विशेष महत्व है। जब तक शिक्षक को यह ज्ञान नही होता कि उसे कक्षा में क्या पढ़ाना है इस प्रकार पाठ्यक्रम ही शिक्षण-सामग्री के निर्धारण में सहायक होता है।

3 शिक्षा की प्रक्रिया का व्यवस्थित होना :→ पाठ्यक्रम एक ऐसा लेखा-जोखा है जिससे शिक्षा के किस स्तर पर जैसे पूर्व-प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक आदि विद्यालयों में किन पाठ्य विषयों का कितना ज्ञान एवं किन क्रियाओं में कितनी दक्षता का विकास किया जायेगा। इस प्रकार निश्चित पाठ्यक्रम शिक्षा की क्रिया को व्यवस्थित करता है।

4 चरित्र निर्माण में सहायक :→ पाठ्यक्रम एक व्यापक अवधारणा है जिसके अन्तर्गत पाठ्यविषय ही नहीं बल्कि विभिन्न क्रिया-कलाप को शामिल किया जाता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

जैसे खेलों का आयोजन, एन.सी.सी व स्काउटिंग आदि। जिससे बालकों का चरित्र-निर्माण एवं उचित नागरिकता का विकास करना है।

5 व्यक्तित्व के विकास में सहायक :→

बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने में पाठ्यक्रम अपना पूर्ण योगदान देता है। व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू जैसे, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक आदि। पाठ्यक्रम विभिन्न खेलकूद की प्रवृत्तियों द्वारा शारीरिक करता है

6 अनुसंधान तथा आविष्कार में सहायक :→

पाठ्यक्रम उन अनुभवों, क्रियाओं तथा जीवन की उन परिस्थितियों का योग है जिनके माध्यम से बालक ज्ञान अर्जित करता है। पाठ्यक्रम उच्च स्तर पर छात्रों को अनुसंधान एवम नित्य नवीन खोज के लिए विषय-वस्तु, क्षमता एवं पूर्ण सहयोग प्रदान करता है

7 तात्कालिक समस्याओं के ज्ञान में सहायक :→

पाठ्यक्रम के द्वारा भौतिक व सामाजिक परिस्थितियों से अवगत कराया जाता है ताकि बालक अपने आप को तेजी से बदलते हुए भौतिक परिवेश में ढाल सके। तथा आने वाले जीवन के लिए तैयार होकर अपने देश व समाज को उत्तम बना सके

8 मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति :→

निर्माण इस बातों को ध्यान में रखकर ही किया जाता है जिससे बच्चे एक निश्चित कार्य एक निश्चित समय में पूरा कर लेते हैं। उन्हें खुशी प्रसन्नता व उत्साह मिलता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

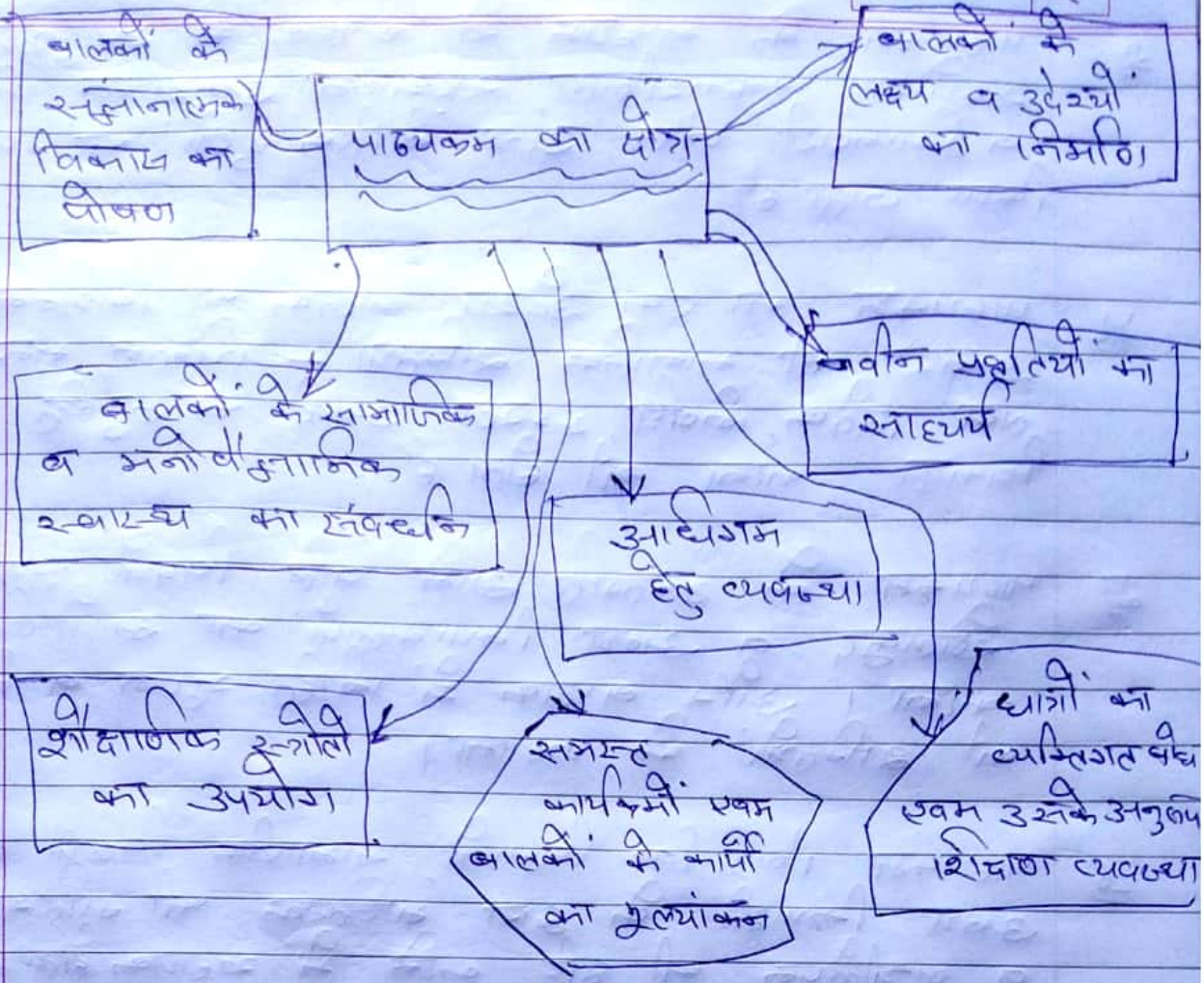

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :→

1. पाठ्यक्रम का प्रथम व उद्देश्य बालक के व्यक्तित्व के पहलुओं जैसे शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, व्यवसायिक, सांस्कृतिक एवम आध्यात्मिक का विकास करना है।

2. पाठ्यक्रम मनुष्य की सभ्यता तथा संस्कृति को सुरक्षित रखकर उसे आगामी पीढ़ी को हस्तान्तरित करता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

4 पाठ्यक्रम के माध्यम से बालक में सहानुभूति सहयोग, सहनशीलता, सद्भावना, अनुशासन, निष्ठा व ईमानदारी जैसे उच्च नैतिक गुणों का विकास किया जाता है।

5 पाठ्यक्रम का एक उद्देश्य बालक की विभिन्न प्रकार की मानसिक शक्तियों - चिन्तन, मनन तर्क, विवेक, निर्णय, स्मरण आदि का समुचित विकास करना भी होता है

6 पाठ्यक्रम के अन्तर्गत आने वाले विषयों, एवं खेलकूद व अन्य क्रियाकलापों का आयोजित करना। और बालक में निहित सृजन व निर्माण की शक्तियों को जगाना।

6 पाठ्यक्रम विभिन्न विज्ञानों, सामाजिक विषयों व अन्य क्रियाओं के द्वारा मस्तिष्क को गतिशील व लचीलेपन को बढ़ाने में सहायक होता है

7 पाठ्यक्रम बालकों को विभिन्न प्रकार का ज्ञान प्रदान करके उनमें उत्सुकता व जिज्ञासा की प्रवृत्ति बढ़ाता है।

8 पाठ्यक्रम विषयों व क्रियाओं के मध्य समन्वय व सामंजस्य स्थापित करके बालकों का संतुलित विकास वह अपने भावी जीवन में सफल मनुष्य बनकर उभर सके।

निष्कर्ष:- इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पाठ्यक्रम का शैक्षिक प्रक्रिया में एक विशेष स्थान रहा। पाठ्यक्रम के द्वारा ही शिक्षण - अधिगम की प्रक्रिया सुचारू रूप से चलती है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Unit – III (1)

Q पाठ्यक्रम निर्माण के मुख्य सिद्धान्त कौन-2 से हैं इसके प्रकारों का वर्णन करेर

Ans पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धान्त पाठ्यक्रम का निर्माण बहुत सोच-चिन्तन रखने वाले विद्वानों द्वारा ही करवाना चाहिए क्योंकि विद्यालय की सभी शैक्षिक क्रियाएं पाठ्यक्रम पर ही आधारित होती है पाठ्यक्रम शैक्षिक उद्देश्यों के अनुकूल हो। पाठ्यक्रम ऐसा हो जो शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक हो।

पाठ्यक्रम के सिद्धान्त

1. शिशु-केन्द्रिता का सिद्धान्त :→ शिशु-केन्द्रित पाठ्यक्रम का अर्थ है कि इसे बच्चे की रुचि, स्वभाव योग्यता अथवा आवश्यकताओं के अनुकूल होना चाहिए। संसार में कोई दो बच्चे समान नहीं होते, परन्तु हर बच्चे के लिए अलग पाठ्यक्रम का प्रावधान नहीं किया जा सकता है। बच्चों को अपनी-2 रुचि के अनुकूल विषय एवं क्रियाएँ चुनने के अवसर प्राप्त होने चाहिए।

2 लचीलेपन का सिद्धान्त :→ पाठ्यक्रम लचीला होना चाहिए ताकि विद्यार्थी व्यक्तिगत भिन्नताओं के आधार पर अपनी व्यक्तिगत रुचियों, प्रवृतियों, आवश्यकताओं, क्षमताओं के अनुसार सीख सके। यदि पाठ्यक्रम कठोर होगा तो वह सम्पूर्ण छात्रों के लिए उपयोगी नहीं होगा। इसमें मनोविज्ञान की सहायता से यह दोष दूर हो सकता है।

3 क्रिया केन्द्रित सिद्धान्त :→ पाठ्यक्रम क्रिया केन्द्रित होना चाहिए। इसको पाठ्यक्रम 'करके सीखना' के सिद्धान्त पर आधारित होना चाहिए।

4 ~~...~~ सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के विकास का सिद्धान्त :— पाठ्यक्रम का निर्माण इस प्रकार करना चाहिए जिससे कि बच्चों में

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का विकास हो सके तथा वे एक कुशल सामाजिक नागरिक बन सके।

5 मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त :→ इस सिद्धान्त के अनुसार पाठ्यक्रम बालकेन्द्रित होना चाहिए बालकेन्द्रित से आशय :- बच्चों के मानसिक स्तर, आवश्यकता, रुचि क्षमता, आयु, जिज्ञासा, योग्यता और उनकी सक्रियता सहभागिता को प्राथमिकता देना।

6 उच्च कक्षाओं की आवश्यकता पूर्ति का सिद्धान्त :→ पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय उन सभी प्रकरणों, नियमों एवं सिद्धान्तों आदि को उचित स्थान देना चाहिए जिनकी आवश्यकता उच्च ज्ञान की प्राप्ति में तथा बच्चों के भावी जीवन में उपयोगी हो।

7 व्यक्तिगत विभिन्नताओं को ध्यान में रखना :→ सभी छात्रों की उपलब्धि एक समान नहीं होती है कुछ पिछड़े हुए (कम बुद्धि) तथा कुछ ~~प्रतिभाशाली~~ प्रतिभाशाली छात्र होते हैं। अतः दोनों प्रकार के छात्रों की प्रतिभाओं को ध्यान में रखकर कुछ सरल विषयवस्तु तथा कुछ कठिन विषय-वस्तु प्रस्तुत करनी चाहिए जिससे कुशाग्र तथा प्रतिभावान छात्र अपनी जिज्ञासाओं को पूर्ण रूप से संतुष्ट कर सके।

8 सृजनात्मक एवं रचनात्मक सिद्धान्त :→ पाठ्यक्रम में ऐसी विषयवस्तु का चयन किया जाना चाहिए, जिससे कि बच्चों में रचनात्मक तथा सृजनात्मक कौशलों का विकास हो सके।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date:

9 व्यापकता का सिद्धान्त :→

पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय ध्यान रखा जाए कि यह शैक्षिक विषयों से संबंधित पाठ्य-पुस्तकों तक ही सीमित न रहे वरन, यह ऐसा होना चाहिए कि छात्रों को समस्त शैक्षिक वातावरण में अभिव्यक्ति करने की क्षमता रखता हो और साथ में इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि छात्रों की भावनाओं का हेत न पहुंचे। यह व्यवस्था ही छात्रों के दृष्टिकोण को व्यापक बनाने में सहायक सिद्ध हो सकती है।

10 सीखने के अनुभवों की संपूर्णता का सिद्धान्त :→

पाठ्यक्रम की रचना स्कूल में पढ़ाए जाने वाले शैक्षिक विषयों के आधार पर नहीं होनी चाहिए बल्कि उसमें उन सभी अनुभवों को भी सम्मिलित करना चाहिए, जो विद्यार्थी स्कूल, कक्षा, पुस्तकालय प्रयोगशाला तथा खेल के मैदान आदि बहुमुखी क्रियाओं से प्राप्त करता है इसमें वे अनुभव भी सम्मिलित हैं, जिन्हें बच्चे शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों के अनौपचारिक संबंधों से प्राप्त करता है।

11 सामुदायिक केन्द्रित का सिद्धान्त :→

आज का बच्चा कल का प्रौढ़ बनेगा। उसे अपने आपको जिस समुदाय में वह रहता है उसके साथ समायोजित करना होगा। पाठ्यक्रम में कुछ ऐसे विषयों और क्रियाओं का समावेश होना चाहिए जो उसे समाज का एक अच्छा नागरिक बनने में सहायता प्रदान करे।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

12. **उपयोगिता का सिद्धान्त** :→ विषयों एवं क्रियाओं का क्रम उपयोगिता की दृष्टि से होना चाहिए। पाठ्यक्रम की रचना करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बच्चों के लिए कौन-सा विषय अथवा कौन-सी क्रिया अधिक उपयोगी है इसलिए, विज्ञान एवं टैक्नोलॉजी के विषयों की वर्तमान युग में बहुत उपयोगी है।

13. **विभिन्न स्तरों के लिए विभिन्न पाठ्यक्रम का सिद्धान्त**
बच्चों के शारीरिक, मानसिक अथवा संवेगात्मक विकास में भिन्नता पाई जाती है। इन विभिन्नता को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम का निर्माण करना चाहिए इस प्रकार का पाठ्यक्रम बच्चे के जीवन को आदर्श की ओर ले जाता है।

14. **संस्कृति का सिद्धान्त** :→ मनुष्य और पर्यावरण में अतः क्रियाएं चलती रहती हैं इन क्रियाओं का परिणाम एक विशेष प्रकार का नवीन रूप होता है पाठ्यक्रम का एक आवश्यक सिद्धान्त है कि इस संस्कृति को बचाकर रखा जाए तथा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्रदान किया जाए।

15. **सामान्यीकरण का सिद्धान्त** :→ पाठ्यक्रम इस प्रकार का होना चाहिए जिससे बच्चों में जागृत, पवित्रता और सद्मार्ग का ज्ञान करवाया जाए। जिससे बालक अपने ज्ञान व क्रिया का प्रयोग करके सामान्यीकरण कर सकता है जिससे पूरा करने के बाद बच्चे वास्तविक जीवन में सफल हो सकें।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

16. जीवन से संबंधित :→ इस पाठ्यक्रम के द्वारा बच्चे में उन योग्यताओं और क्षमताओं का विकास हो जिससे वह सामाजिक जीवन में सफलतापूर्वक जीवन व्यतीत करने में सहायक हो।

17. अवकाश का सदुपयोग का सिद्धान्त।→ पाठ्यक्रम में विभिन्न क्रियाओं की व्यवस्था होनी चाहिए, ताकि विद्यार्थियों को केवल कार्य के लिए ही नहीं, बल्कि अवकाश के समय के लिए प्रशिक्षित किया जा सके।

18. निरन्तरता का सिद्धान्त।→ पाठ्यक्रम इस प्रकार का होना चाहिए जिससे बच्चों में प्राप्त अनुभव से वह जटिल सामग्री को भी आसानी से समझ ले। वह अपने कार्य को निरन्तरता बनाए रहें जिससे बच्चा का अधिगम तेज हो जाएगा।

19. उपलब्धि का सिद्धान्त।→ प्रत्येक समाज अपनी शिक्षा से अपेक्षा करता है कि बालक का आचरण उत्तम हो, ऐसा होने पर वे अपने भावी जीवन को उत्तम बना सकेंगे। इसलिए उपयुक्त एवं आवश्यक आचरण की नींव जीवन के प्रारम्भ में ही डाल दी जाए। जिससे उत्तम व जागरूक नागरिक बन सके।

20. परिपक्वता का सिद्धान्त:→ जैसे-जैसे विद्यार्थी बड़ा होता जाता है उसकी रुचियों और इच्छाओं में भी परिवर्तन होते जाते हैं। आरंभिक बाल्यकाल का समय आश्चर्य तथा रोमांच का होता है। उस स्तर पर केवल उन्हीं विषयों तथा क्रियाओं को पाठ्यक्रम में शामिल करना चाहिए जिसमें रोचक मनोरंजक तत्व शामिल हों। उसके पश्चात विद्यार्थी व्यावहारिक वस्तुओं में रुचि रखता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

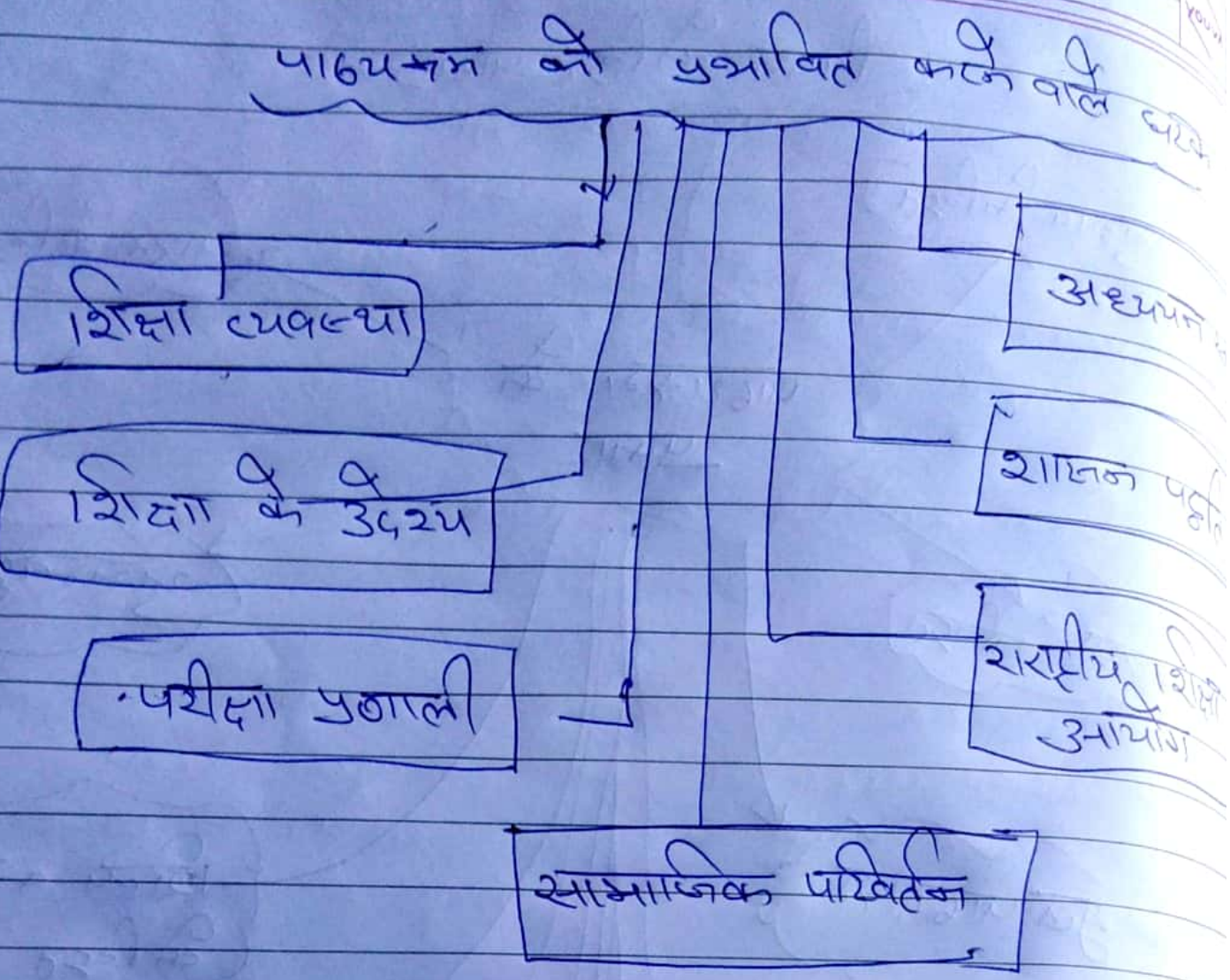

निष्कर्ष :→ उपरोक्त कथन के अनुसार पाठ्यक्रम ऐसा है जिसको प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर सके। उसके अतिरिक्त समाज तथा केन्द्र सरकार एवम राज्य सरकार का भी पाठ्यक्रम पर प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़ता है। इसलिए पाठ्यक्रम का निर्माण बालकों के भावी जीवन तथा विषय की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(1) UNIT – III

Q) पाठ्यक्रम के परम्परागत उपागम के बारे में आप क्या जानते हैं उनकी विशेषताएँ एवं महत्व का वर्णन करें →

A) परम्परागत पाठ्यक्रम आज आलोचना का केन्द्र बना हुआ है। शिक्षा के क्षेत्र में आज जो नवीन प्रवृत्तियां आई हैं पाठ्यक्रम का ही परिणाम है। परम्परागत पाठ्यक्रम न तो युग के अनुकूल है और न ही बालक के। किन्तु युग-युग से चले आ रहे इस पाठ्यक्रम में कुछ ऐसी शक्ति है कि हम किसी न किसी रूप में इसे अपनाए हुए हैं पाठ्य-पुस्तकों पर आधारित होने के कारण यह "पुस्तक का पाठ्यक्रम तथा विषयों को केन्द्र मानकर चलने के कारण यह विषय केन्द्रित पाठ्यक्रम कहलाता है।"

विषय केन्द्रित पाठ्यक्रम एक ऐसी योजना है जिसमें कि बालकों ज्ञान प्रदान करने के लिए विषयों का अध्ययन कराया तथा विषय सामग्री को इस प्रकार संगठित किया जाता है कि बालक अपने ज्ञान में वृद्धि करे।

परिभाषाएं ! →

अलबर्टी महोदय " छात्रों की क्रियाओं को विषय केन्द्रित आधार पर निश्चित तथा संगठित किया जाता है"

सेलर एवम अलेक्जेण्डर " उस योजना को ज्ञान के संगठित अंगों के अध्ययन के अनुभव को शिक्षा के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए प्रयोग में आने वाली प्रमुख विधि माना जाता है। तथ्यों, विवरणों, व्याख्याओं, सामान्यीकरण, सिद्धान्तों तथा धारणाओं से युक्त ज्ञान को सामग्री के अंगों के रूप में गठित तथा पुनर्गठित किया जाता है"

विषय - केन्द्रित पाठ्यक्रम की विशेषताएं

1. अनुभवों की प्रभावशाली व्याख्या के लिए सुविधा

विषय केन्द्रित पाठ्यक्रम में एक क्रम होता है जिसके बल पर बालक अपने अनुभवों को सरलता से ग्रहण कर लेता है और उनका प्रयोग अपने भावी जीवन में करता है

2. समझने में सरल तथा साधारण :- विषय का क्षेत्र निश्चित करने में पाठ्यक्रम बहुत उपयोगी है उसके अभाव से हमें लिए यह समझना मुश्किल हो जाता है कि क्या पढ़ाया जाए और कितना पढ़ाया जाए आदि। अन्य प्रकार के पाठ्यक्रमों को अध्यापक के लिए समझना मुश्किल होता है किन्तु सीमाओं में बंधा हुआ होने के कारण विषय - केन्द्रित पाठ्यक्रम बालकों तथा शिक्षकों दोनों के लिए सरल होता है

3. सरलता से परिवर्तनीय :- हमारा समाज गतिशील है इसमें नित परिवर्तन होते रहते हैं यह परिवर्तन समाज के कार्यों तथा संरचनाओं में निरन्तर होते हैं इसलिए समय की मांग के अनुसार पाठ्यक्रम में परिवर्तन करते रहना आवश्यक होता है जिन विषयों की अब कोई उपयोगिता ही नहीं रही उन्हें निकालकर नए समयानुसार उपयोगी विषयों को इसमें बड़ी सरलता से जोड़ा जा सकता है

4. मूल्यांकन में सरलता :- विषय केन्द्रित पाठ्यक्रम में विषय सामग्री पर अधिकार कर लेना ही मुख्य लक्ष्य होता है यह जानना बड़ा सरल हो जाता है कि बालक विषय विशेष पर अधिकार कर सका है नहीं। सब कुछ निश्चित होने के कारण मूल्यांकन करना सरल हो जाता है जिससे बालक

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

के ज्ञान भी परख की जाती है।

5 बौद्धिक विकास में सहायक :→ यह पाठ्यक्रम बालकों की मानसिक व बौद्धिक विकास में बहुत सहायक सिद्ध हुआ। यह ज्ञान के संगठन एवं रचना के बल पर विषय सामग्री का अध्ययन करने की क्षमता बालकों में बड़ी सफलता से विकसित करता है।

6 मानव व्यवहार के सुधार में सहायक :→ ज्ञान, सूझ-बूझ तथा विचारशीलता पर आधारित होकर मानव व्यवहार की अनेक क्रियाएं अच्छाई की ओर बढ़ती है। ज्ञान प्राप्ति तथा सूझ-बूझ बढ़ाने में विषयों का क्रमबद्ध अध्ययन बहुत सहायक होता है।

7 शिक्षक, विद्यार्थी तथा अभिभावकों द्वारा समर्थित – शिक्षक को उस विषय विशेष में विशेष योग्यता प्राप्त करनी होती है, जिसे उसको पढ़ाना है, शिक्षण-विधियों का ज्ञान उसे सफल शिक्षक बना देता है छात्रों के लिए विषय सामग्री का निश्चित ज्ञान होना चाहिए। माता-पिता तथा अभिभावक भी इस पाठ्यक्रम का समर्थन करे।

पाठ्यक्रम की कमियां

1. विषयों के रूप में संकुचित अवधारणा :- पाठ्यक्रम बहुत ही सीमित व संकुचित विचारधारा पर आधारित है कुछ विषयों को शामिल करके उसे पाठ्यक्रम का नाम दे दिया जाता है इस प्रकार बिना किसी समन्वय के विषयों को अलग-2 रूपों में विभाजित करके बालकों द्वारा ज्ञान ग्रहण किया जाता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(४)

२ अमनोवैज्ञानिक ! – पाठ्यक्रम मनोवैज्ञानिकता बालकों की वैयक्तिक भिन्नता की अवहेलना की जाती है तथा उन तथ्यों को याद बल दिया जाता है जिन्हें बालक समझ भी नहीं बालक की रुचि, क्षमताओं, आवश्यकताओं, भावनाओं सभी तथ्यों की अवहेलना की जाती है इस प्रकार मे [redacted] अमनोवैज्ञानिक होना स्वयं में एक दोष है

३ प्रजातान्त्रिक मूल्यों के विपरीत → पाठ्यक्रम प्रजातान्त्रिक मूल्यों के प्रतिकूल है अनुपयुक्त अनुभवों के द्वारा बालकों में अच्छे गुणों का विकास नही होता इसलिए पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जिससे बालकों में नैतिक गुणों का विकास हो और समाज में एक अच्छा नागरिक बन सके।

४ सीखने की प्रक्रिया को सीमित कर दिया जाएगा, तो बालक के विकास में बाधा होगी बालकों के सम्मुख निरर्थक तथा अनावश्यक अनुभव प्रस्तुत किए जाते हैं इस प्रकार प्राप्त किया गया ज्ञान व्यावहारिक परिस्थितियों में उपयोगी सिद्ध नहीं हो पाता।

५ पुस्तकीय एवं सैद्धान्तिक ज्ञान पर बल ! – पाठ्यक्रम पूरी तरह पुस्तकीय ज्ञान पर ही दिया जाता है जिससे व्यावहारिक पक्ष की अवहेलना की जाती है बालक की योग्यता का ज्ञान उसकी कक्षा में पढ़ाए गए विषय से प्राप्त होता है बालक ने पुस्तक को रटकर परीक्षा में अच्छे अंक पा लिये और वह योग्य बालकों की श्रेणी में आ जाता है लेकिन व्यावहारिक जीवन का ज्ञान नही होता ।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

6. निर्माण दोष पूर्ण :- इस प्रकार का पाठ्यक्रम कभी भी बालकों के अनुकूल नहीं होता है जिन्हें कभी भी उस कक्षा को पढ़ने का अवसर नहीं मिला है। पाठ्यक्रम का निर्माण विशेषज्ञ निज कल्पना के आधार पर करता है उस स्तर पर बालक कैसे पहुँच सके। प्रौढ़ व्यक्ति और बालक के चिन्तन में बड़ा अंतर होता है। बालकों को छोटी प्रौढ़ मान कर चलना इस पाठ्यक्रम का सबसे बड़ा दोष है।

7 शिक्षा के अविधि साधनों की अवेहलना :- स्कूल से बाहर जो भी बालक अनुभव ग्रहण करता है पाठ्यक्रम उन्हें स्वीकार नहीं करता और अविधिक शिक्षा साधनों - घर, परिवार, समुदाय आदि की इस प्रकार पूरी तरह से अवेहलना करके यह शिक्षा को पंगु बनाता है।

8 सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक की अवेहलना :- पाठ्यक्रम में हमारी सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता था जिससे बालक को उसके वास्तविक जीवन से दूर कर देती थी भूतकाल के अनुभव ही नहीं वर्तमान के अनुभव बालक के अनुभ विकास के लिए आवश्यक होते हैं परन्तु पाठ्यक्रम उस पर कोई ध्यान नहीं देती थी

9 परीक्षाओं का अत्यधिक भार :- यह विषय केन्द्रित परीक्षाओं के बोझ से उतना दबा हुआ छात्रों के सिर पर हर समय परीक्षा का भूत सवार रहता है विषय सामग्री को रट लेने से उसे परीक्षा उत्तर देने के अलावा वह कुछ नहीं सीखता जिससे उसका रुक जाता है और शिक्षा का उद्देश्य पूरा नहीं पाता।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

10 शिक्षक नई शिक्षण विधियों को नहीं अपनाते :→

पाठ्यक्रम में पुरानी घिसी-पिटी बातें रहती है अध्यापक न तो शिक्षण की नवीन विधियों तथा नए-शिक्षण सूत्रों का प्रयोग करने में उत्साह दिखाता है न ही वह अपने शिक्षण के तरीके बदलता है। जिससे बालकों का शिक्षण पूरी तरह से योग्य नहीं होता है उनका शिक्षण प्रभावशील प्रभाव शाली भी नहीं बन पाता।

पाठ्यक्रम के सुझाव :→

1. बालकों को योग्य और क्रियाशील नागरिक बनाने के लिए पाठ्यक्रम में उपयोगी विषयों एवं क्रियाओं का समावेश किया जाना चाहिए।

2 स्वस्थ नागरिकों से ही देश की उन्नति एवं रक्षा की आशा की जा सकती है सभी बच्चों को स्वास्थ्य रक्षा सम्बन्धी नियम एवं क्रियाओं का ज्ञान कराना चाहिए

3 देश के कुछ भागों में राष्ट्र भाषा हिन्दी की उपेक्षा की जाती है परन्तु राष्ट्रीय एकता तथा भावानात्मक एकता के लिए हमें राष्ट्रीय भाषा का अध्ययन अनिवार्य रूप से करना चाहिए

4 बच्चों की मनोवैज्ञानिक भिन्नता को ध्यान रखते हुए बहुमुखी कार्यक्रम का आयोजन करना चाहिए हमारे विद्यालयों को चाहिए कि वे सभी वर्ग के बच्चों को विषय चुनाव का अधिक से अधिक अवसर दें।

5. जहां तक सम्भव है, पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जिसका बच्चों से सम्बन्ध हो और जिसे बच्चे अपने अध्ययन के आधार पर ग्रहण कर सके।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(7)

Page No.:
Date:

6 पाठ्यक्रम में तकनीकी तथा व्यावसायिक शिक्षा की पूरी-2 व्यवस्था की जानी चाहिए। जिसे पूरा करने के बाद बच्चे उत्पादन तथा उद्योग कार्य में प्राथमिक दक्षता प्राप्त कर लें और अपनी आजीविका कमाने योग्य बन जाएं।

7 माध्यमिक स्तर पर विषयों की भीड़ को रोक देना चाहिए जैसे - किसी एक क्षेत्र से सम्बन्ध रखने वाले विषयों का एकीकरण किया जा सकता है इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, तथा नागरिक शास्त्र जैसे विषयों का सम्बन्ध सामाजिक वातावरण से है।

8 पाठ्य-वस्तु का चयन करते समय बच्चों की मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक स्थिति को सामने रखना चाहिए।

9 पाठ्यक्रम को परीक्षाओं से अधिक महत्व देना चाहिए। जब तक परीक्षाओं में सुधार नहीं किया जाता, पाठ्यक्रम में भी सुधार नहीं हो सकता।

दोषकर्म :→ परम्परागत या विषय केन्द्रित पाठ्यक्रम पूरी तरह से विषय सामग्री पर आधारित होता है। विषयों से बाहर के अनुभवों को इसमें स्थान नहीं दिया जाता तथा बालक के बौद्धिक विकास को ही शिक्षा का उद्देश्य मानकर शिक्षण किया जाता है बालक की रुचियों की अवहेलना की जाती है तथा ज्ञान प्रदान करने के लिए ही सम्पूर्ण प्रयास किए जाते हैं विषयकेन्द्रित पाठ्यक्रम एक ऐसी योजना है जिसमें कि बालकों को मात्र ज्ञान प्रदान करने के लिए ही सम्पूर्ण प्रयास किए जाते हैं

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner